REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

आधुनिकीकरण और शिक्षा

Mousumi Mukherjee
M.Ed. , Dipser College of Education , Deoghar.

भूमिका :–

हम सभी आज कहते हैं कि, हम अब आधुनिकता या आधुनिक के युग में रह रहे है। हमारी प्रत्येक क्रियाओं व्यवहार मूल्य व दृष्टिकोण तथा विश्व के प्रति देखने का नजरियाँ अब आधुनिक हो गया है अथवा तेजी से आधुनिक हो रहा है। आज सभी व्यक्ति आधुनिक होना चाहते है और इसके लिए उसे आधुनिकीकरण नामक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

अर्थ :–

आधुनिकीकरण कोई दर्शन या आन्दोलन नहीं है जिसमें स्पष्ट मूल्य व्यवस्था हो। आधुनिकीकरण एक प्रक्रिया है परिवर्त्तन की, इससे तात्पर्य है– विज्ञान व तकनीकी पर आधारित समाज की प्रक्रिया में परिवर्त्तन आना, शैक्षिक विकास के साथ आधुनिकीकरण की प्रक्रिया प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। इसका उद्देश्य जनसाधारण की जीवन स्तर को ऊँचा उठाना है। औधोगिक विकास के माध्यम से आर्थिक विकास के माध्मय से आधुनिकीकरण से आशय है गतिशीलता

आधुनिकीकरण का अर्थ प्रत्येक के लिए अलग–अलग है। सामान्य व्यक्ति के लिए इसका अर्थ सुख–सुविधा जुटाना तथा उनका प्रयोग करना है। अनपढ़ ग्रामीण व्यक्ति के लिए औद्योगिकरण ही आधुनिकीकरण है। समाजशास्त्री के लिए यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके कारण विभिन्न समाजों में अन्तर किया जा सकता है। अर्थशास्त्री दृष्टिकोण से इसका अर्थ एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसके कारण कोई समाज नई तकनीक का प्रयोग करके उपलब्ध साधनों का अधिकत्तम उपयोग करने का प्रयास करता है, जिससे आर्थिक विकास हो सकें। इतिहासकार का दृष्टिकोण से यह ऐसी प्रक्रिया है जिसके कारण व्यक्ति नया ज्ञान प्राप्त करता है तथा उसके आधार पर अपने जीवन के तरीको व सोच को बदलता है।

कुछ लोग पाश्चात्यीकरण को ही आधुनिकीकरण मानते है। पाश्चात्यीकरण से तात्पर्य उसके जीवनशैली को अपनाना होता है। इससे जीवनस्तर में परिवर्त्तन आ सकता है यह सकारात्मक अथवा नकारात्मक दोनों ही हो सकते है। परंतु आधुनिकीकरण नकारात्मक नहीं हो सकता है। इससे तात्पर्य पूर्वी राष्ट्रों के व्यक्तियों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में देश–विदेश की नवीनतम वैज्ञानिक खोजों, तकनीकी एवं प्रबंध तकनीक को अपनाकर उसकी कार्यक्षमता को बढ़ाने, उत्पादन बढ़ाने व आर्थिक विकास द्वारा जीवन स्तर ऊँचा उठाने से होता है। जीवन स्तर को ऊँचा उठाना ही आधुनिकीकरण का आवश्यक शर्त है। पाश्चात्यीकरण का मूल आधार है अनुकरण जबकि आधुनिकीकरण की आत्मनिर्भरता व विकास।

विशेषताएँ :–

– आधुनिकीकरण एक गतिशील प्रक्रिया है।
– एक परम्परागत समाज को आधुनिक समाज में परिवर्तित करता है।
– देश को उन्नत विकासवान तथा नया बनाता है।

– यह एक प्रगतिशील प्रक्रिया है।

– एक देश की भौतिक संस्कृति के साथ–साथ उसके जीवन शैली, मूल्य व्यवस्था और विश्वासों में भी परिवर्त्तन लाता है।

आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक कारक :–

समाजशास्त्री एस0 सी0 दुबे के अनुसार आधुनिकीकरण के लिए निम्नलिखित कारकों का होना आवश्यक है :–

1. योजना का सुव्यवस्थित बनाना, राजनीतिक एंव आर्थिक व्यवस्था को धर्मनिरपेक्ष बनाना और कानूनों को प्रभावी ढंग से लागू करना आवश्यक है।
2. सामाजिक अनुशासन को बनाये रखना, अनुशासन ऊपर से नीचे तक के सभी लोगों के लिए समान प्रकार का बनाया रखा जाना आवश्यक है।
3. आधुनिक योजनाओं को विशेषज्ञें की राय से ही बनाया और लागू किया जाये।
4. उचित पुरस्कार व्यवस्था हो, अच्छा काम करने वालों को प्रोत्साहन और पुरस्कार दिया जाये और काम न करने वालों और कामचोरों को दण्ड देने की व्यवस्था हो।

आधुनिकीकरण के कुप्रभाव :–

- इसके कारण वर्गभेद, गरीबी, भुखमारी में वृद्धि हुई है।
- इससे बेकारी की संख्या बढ़ी है।
- इसका प्रभाव सामाजिक एकता, सौहार्द पर भी पड़ा है।
- आधुनिक मूल्यों और परम्परागत मूल्यों के बीच द्वन्द्व सृष्टि हुई है।
- आधुनिक शिक्षा से बंचित लोग और अधिक पिछड़े के जाति में सामिल हो रहे है।

आधुनिकीकरण के इस मार्ग पर भारत भी सामिल हो गया है। भारत के लिए आधुनिकीकरण विकास की और आगे बढ़ने का एक जरिया बन गया है, और इस पर चलकर ही सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक परिवर्त्तन सम्भव हो सकें। पिछले चार दशको से ही संविधान, कानूनों, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, तकनीकी, ज्ञान, सूचना तकनीकी, शिक्षा, कम्प्युटर के प्रयोग आदि के द्वारा भारतीय समाज को आधुनिक बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

आधुनिकीकरण में शिक्षा की भूमिका क्या होनी चाहिए इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे है जो निम्न है :–

शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय भावना का विकास होता है तथा तकनीकी प्रयोग के लिए दक्षता का भी विकास होता है। आर्नोल्ड एण्डरसन की मान्यता है कि औपचारिक शिक्षा ही केवल अध्यापन कुशलता के लिए पर्याप्त नहीं है। कभी कभी विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा व्यर्थ हो सकती है, क्योंकि यह डिग्रीधारियों की संख्या में तो वृद्वि कर देती है, किन्तु आधुनिक दक्षता तथा अभिरूचियों से पूर्ण लोगों की संख्या में वृद्धि नहीं करती।

शिकागो विश्वविद्यालय के शिक्षा और समाजशास्त्र के अध्ययन तथा तुलनात्मक शिक्षा केन्द्र के भूतपूर्व निर्देशक सुप्रसिद्ध शिक्षा समाजशास्त्री प्रो0 सी0 हैराल्ड एण्डरसन ने निम्न महत्वूर्ण विचार प्रस्तुत किया है :–

''अधिकतर विश्व में आज हम शिक्षा का जो आधुनिकीकरण देख रहे है वह शिक्षा के द्वारा किये गये आधुनिकीकरण के समान है। पाठशाला की शिक्षा आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक पूर्ण शिक्षा का केवल एक भाग ही होती है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से आधुनिक और शिक्षा'' की समस्या दो–तीन प्रश्न उठाकर स्पष्ट किया जा सकता है। (1) एक देश के पास कितनी शिक्षा ? (2) इसके युक्त किस किस्म की शिक्षा ग्रहण करें ? (3) यदि आधुनिकीकरण को आगे बढ़ाना है तो किसे उस शिक्षा को प्रप्ता करना चाहिए ?

एक देश के पास कितनी शिक्षा हो ?

पहले तो देश को आधुनिकीकरण करने के लिए समर्थ होना चाहिए तथा उसे अपनी आर्थिक अवस्था पर ही निर्भर होना चाहिए। सबसे पहले देश की आवश्यकता देखनी चाहिए। युवकों को विस्तृत शिक्षा प्रदान करनी

चाहिए इससे व्यवहारिक कुशलताओं की पूर्ति धीरे–धीरे हो जाएगी अर्धकुशल व्यक्तिओं के पिछे व्यर्थ समय नष्ट नहीं करना चाहिए।

हमारे सरकार प्राथमिक शिक्षा के जगह विश्वविद्यालयी शिक्षा पर ज्यादा धन खर्च करते है। इसका सकारात्मक परिणाम नहीं नजर आ रहा है वरन आज लाखों की संख्या में कलाओं और विज्ञानों के ग्रेजुएट और पोस्ट–ग्रेजुएट बेरोजगार है हजारों की संख्या में डॉक्टरी, इंजीनियरिंग, शिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी बेकार है।

कैसी शिक्षा?

सामान्य शिक्षा का महत्व अपरिहार्य है लेकिन आज के आधुनिकीकरण के दौड़ में सामिल होने के लिए तकनीकी शिक्षा भी निहायत आवश्यक है। अतः प्रत्येक देश को सामान्य शिक्षा के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा को भी समान महत्व देकर पाठशाला में प्रारंभ की कक्षाओं में से ही प्रारंभ करनी चाहिए इससे आधुनिकीकरण का प्रभाव व्यापक होगा।

किसे शिक्षा प्रदान करनी चाहिए?

देश को आधुनिक बनाने के लिए सबसे पहले जरूरी है शिक्षा का सार्वभौमिकरण पहले शिक्षा का मात्रात्मक पक्ष को बढ़ाना चाहिए फिर उसके गुणत्मक पक्ष पर नजर डालना चाहिए। ग्रामीण पाठशालाओं में शिक्षा का मान अत्यन्त निम्न है, इसके फलस्वरूप बेरोजगारी बढ़ रही है। सभी लोगों प्रभावशाली शिक्षा प्रदान करनी चाहिए उसके बाद योग्य विद्यार्थियों को एक सही प्रकार से तैयार की गयी जनशक्ति योजना के अनुसार तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। इससे देश में कुशल तथा विशेषज्ञ प्राप्त होगा तथा देश आधुनिकीकरण के विकास में योग दे सकेगा।

आधुनिकीकरण में शिक्षा की भूमिका :–

कोठारी कमीशन (1964–66) ने आधुनिकीकरण के उपर बल दिया था तथा शिक्षा का इनका प्रमुख साधन माना था। कमीशन के अनुसार अगर देश को सशक्त बनाना है तो आधुनिकीकरण को अपनाना होगा तभी भारत एक विशाल आधुनिक प्रजातंत्रीय राष्ट्र बन सकेगा। 1986 में प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने भी नई शिक्षा नीति में आधुनिकीकरण को महत्व दिया।

– शिक्षा के द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है। जो आधुनिकीकरण का साधन है।

– शिक्षा से ही नवीनतम जानकारी प्राप्त होगा जो आधुनिकीकरण में सहायक है।

– शिक्षा व्यापक दृष्टिकोण विकास करने में सहायता करता है, जिसे आधुनिकीकरण अपनाने में आसानी होता है।

– आधुनिकीकरण को सही से अपनाने के लिए कुशल नेता का होना आवश्यक है, और इसके लिए शिक्षा ही एकमात्र साधन है।

– कृषि, चिकित्सा, उद्योग तथा प्रबंधन के क्षेत्र में विशेषज्ञ तैयार करना शिक्षा का उद्देश्य है, जिससे आधुनिकीकरण में मदद मिले।

– आधुनिकीकरण पुराने मूल्यों को भूलना नहीं चाहता है। शिक्षा ही वह साधन है जो आधुनिकीकरण के साथ–साथ हमें पुराने मूल्यों से जोड़े रखती है।

शिक्षा के द्वारा आधुनिकीकरण करने का तरीका :–

- शिक्षा समाजीकरण का एक आधार है जो नये मूल्यों को दिखला सकती है। शिक्षा आधुनिकीकरण के बाधक तत्व को नई दृष्टिकोण के द्वारा बदल सकते है।
- शिक्षा उच्च स्तर तक पहुँचने का मार्ग प्रदान करती है। आधुनिकीकरण में लगे हुए लोग सभी लोग अर्द्ध आधुनिक विद्यालयों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों के ही उत्पादन है।
- शिक्षा ऐसा नेतृत्व प्रदान करती है जो समस्या निदान करने की क्षमता कर सकते है और यही नेता देश को आधुनिक बनाने में सहायता करता है।

- शिक्षा समाज को गतिशील बनाती है और गतिशील समाज ही आसानी से पुराने नीति को छोड़कर आधुनिकीकरण के पथ पर अग्रसर हो जाते है।

आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा कैसी दी जाए :–

शिक्षा को आधुनिकीकरण के यंत्र बनाने के लिए शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक दोषरहित और निस्पक्ष बनाना होगा, इसके लिए निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाय। :–

1. शिक्षा के उद्देश्य को व्यापक तथा आधुनिक बनायें :–

हम सभी वैश्वीकरण के युग में है और इस युग के साथ चलने के लिए हमें आधुनिकीकरण को अपनाना जरूरी है। कोठारी आयोग से ही शिक्षा का उद्देश्य व्यापक तथा आधुनिक बनाने के उपर जोर दिया गया इस नए दौड़ में सामिल होने के लिए।

2. शिक्षण विधियाँ :–

आधुनिकीकरण के लिए नवीनतम विधियों का प्रयोग जरूरी है। टी0वी0, प्रोजेक्टर, कम्प्युटर तथा अन्य उपकरण उपलब्ध होने चाहिए जिनसे बच्चों को विभिन्न विषयों की नवीनतम जानकारी उपलब्ध कराई जा सकें। अधिक से अधिक पुस्तकालय उपयोग करने के लिए बच्चों को प्रेरित करना चाहिए।

3. पाठ्यक्रम :–

शिक्षा शब्द में सबसे पहले पाठ्यक्रम का ही स्मरण आता है। आधुनिकीकरण में पाठ्यक्रम का भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। पाठ्यक्रम में ऐसे विषयवस्तु सामिल करना चाहिए जिसे छात्र की सोच व्यापक तथा आधुनिक हो। पाठ्यक्रम में विभिन्न देशों में हो रही प्रगति के बारे छात्रों को अवगत कराना चाहिए।

4. शिक्षक :–

शिक्षा और शिक्षक दो शब्द एकसाथ जुड़ी हुई है। शिक्षक की भूमिका आधुनिकीकरण के अभिकर्ता के रूप में होना चाहिए शिक्षक की सोच वैज्ञानिक तथा परिवर्तन में विश्वास करने वाला होना चाहिए। शिक्षक को सृजनशील तथा बच्चों को आधुनिकीकरण के प्रति प्रेरित करने वाला होना चाहिए।

5. विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्था :–

बहुत सी विद्यालयों में अभी भी पुरानी ही नियम चल रहा है। युग के साथ बहुत सी विद्यालयों में चलने के लिए प्रशासनिक व्यवस्था को भी आधुनिक बनाना होगा जिससे छात्रों की आधुनिकीकरण की मार्ग में कोई भी बाँधा उत्पन्न न हो।

यह मुख्य बिन्दुओं को छोड़कर भी बहुत सी सहगामी गतिविधियों के द्वारा आधुनिकीकरण कर सकते है। विद्यालय में विज्ञान प्रदशर्नी का आयोजन किया जा सकते है। छात्रों को शैक्षिक भ्रमण में ले जाया सकता है। प्रातःकालीन सभी में विभिन्न नवीनतम खोजों के बारे में छात्रों को अवगत कराया जाना चाहिए, महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम भी आधुनिकीकरण में सहायक हो सकते है।

किसी भी देश के लिए आधुनिकीकरण विकास की और ले जाने वाला एक मार्ग है। इस पर चलकर ही सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक परिवर्त्तन सम्भव है। शिक्षा ही इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण है। अतः आवश्यक है कि ऐसी शिक्षा व्यवस्था अपनाया जाए जिससे बच्चों में वैज्ञानिक प्रकृति का विकास हो तथा वे कर्मठ व इमानदार बनें।

संदर्भ

(1) रूहेला, एस0पी, शिक्षा के दर्शिनिक तथा समाजशस्त्रीय आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
(2) सकसेना, एन0आर. स्वरूप (1977) शिक्षा दर्शन तथा महान शिक्षाशास्त्री, प्रथम प्रकाशन विनय रखेगा, मेरठ।

(3) मदान, पूनम (2013) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, प्रथम प्रकाशन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा,
(4) https.//www.scotbuzz.org>adhunikikran
(5) hivikaspedia.in>education-best practices.

Mousumi Mukherjee
M.Ed. , Dipser College of Education , Deoghar.

LBP PUBLICATION